SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारत के युगद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द

संतोष रजक, Ph.D., इतिहास विभाग
कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्टस एण्ड साइंस पटना, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
संतोष रजक, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/04/2024
Revised on : -----
Accepted on : 04/06/2024
Overall Similarity : 06% on 27/05/2024

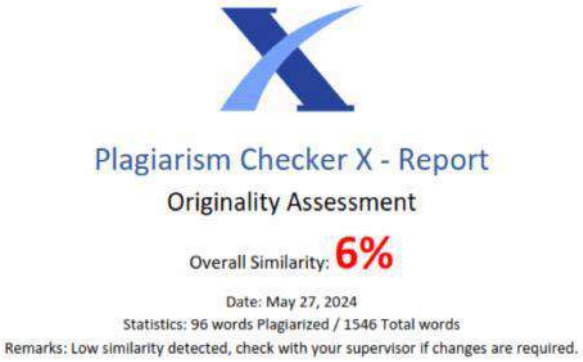

शोध सार

वर्तमान काल संक्रमण–काल है, विज्ञान की उन्नति से हमसब भौतिक सुख में लिप्त है साथ ही आतंकवाद, असहिष्णुता भोग–वासना से मानव जीवन ग्रसित है। ऐसे में श्री रामकृष्ण परमहंस ने विश्व मानव को परम सत्य 'मोक्ष' प्राप्त करने और मानव में निहित '"देव' का विकास ही जीवन का उद्देश्य है'' का संदेश दिया। उनके इस सन्देश के प्रचारक बने उनके परम प्रिय शिष्य स्वामी विवेकानन्द। उन्होंने अपने परिव्राजक काल में सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। राजा, रंक, धनी, गरीब, मुर्ख, ज्ञानी सभी से मिले। उन लोगों के विचारों और समस्याओं से अवगत हुए। भारत वासियों की दुर्दशा को देखकर स्वामी विवेकानन्द का हृदय तड़प जाता था। स्वामी जी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक रूप से दुर्बल लोगों की परिस्थितियों को सुधारने के लिए आजीवन अथक प्रयास करते रहे।

मुख्य शब्द

परम सत्य, वामी विवेकानंद, अर्न्तदृष्टि, प्रतिमूर्ति, भारत.

भारत की आध्यात्मिकता प्राचीन काल से समुद्र की लहरों की तरह अनंत आकाश को छु रही है। भारतवर्ष की पावन भूमि महान ऋषि मुनियों, अवतारों के चरण स्पर्श से धन्य हुई है। जिस प्रकार बादलो से कभी–कभी सूर्य का प्रकाश ढ़क जाता है, वैसी ही जब–जब विदेशी आक्रमण, कुसंस्कार, अन्धविश्वास रूपी आघातो से भारत अचेत सा हो गया, तब–तब महान भारतीय विभूतियों द्वारा बारम्बार भारत को जागृत किया गया।

आदि काल से भारत के कई ज्ञानी, ऋषि मुनि आदि के बारे में जानकारी मिलती है, लेकिन पगडीधारी, चिर यौवन के प्रतीक संन्यासी के विषय में ज्ञात नहीं होगा। यह वीर संन्यासी विवेकानन्द का तेजस्वी चेहरा

पगडी से अत्याधिक आकर्षित प्रतीत होता था। उनका आत्मविश्वासी व्यक्तित्व दो विशाल उज्जवल नेत्र भी बड़े प्रभावकारी है। अपने गुरू श्री राम कृष्ण देव की वाणी और विचार को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए जिस रामकृष्ण मिशन की स्थापना की वह अब विशाल वृक्ष की तरह चारो दिशाओं में विस्तृत होकर देश और समाज के विकास में संलग्न है। विगत 125 वर्षो से मानव–सेवा में समर्पित रामकृष्ण मिशन अपनी गौरख पताका के साथ विराजित है।

स्वामी जी वनराज सिंह जैसे साहसी थे। स्थल हो या जल, 'भय' उनको छू भी नहीं सकता था। उन्होंने कन्याकुमारी की सामुद्रिक धारा को चीरकर समुद्र में स्थित शिलाखण्ड में बैठकर 3 दिन, 3 रात भारत माता का ध्यान किया। उनका तन–मन सब कुछ भारतमय था। उनके भारत शब्द के उच्चारण मात्र से ही सम्पूर्ण भारत अनुभूत होता था। उनके जीवन का अराध्य भारत वर्ष था। 1897 ई0 में पाश्चात्य देशों में भारतीय संस्कृति की ध्वजा लहराकर जब स्वामी जी भारत लौटे है, तब कोलम्बो के भारतीय नागरिकों ने उनका भव्य स्वागत किया। उस स्वागत के उत्तर में अपने व्यख्यान में स्वामी जी कहते है ''यदि पृथ्वीपर ऐसा कोई देश है, जिसे हम पुण्य भूमि कह सकते है, यदि ऐसा कोई स्थान है, जहाँ पृथ्वी के सब जीवों को अपने कर्मफल भोगने के लिए आना पड़ता है, यदि कोई स्थान है, जहाँ मानव जाति के भीतर क्षमा, धृति, दया, शुद्धता आदि सद्वृतियाँ का सर्वाधिक विकास हुआ है, यदि कोई देश है, जहाँ सबके अधिक आध्यात्मिकता और अर्न्तदृष्टि का विकास हुआ है, तो मैं निश्चित रूप से यही कहुँगा की वह हमारी मातृभूमि भारत वर्ष है।''[1]

कई सौ वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध ने विश्व के पूर्वी भाग में बौद्ध धर्म के माध्यम से शान्ति का संदेश दिया था। स्वामी विवेकानंद के माध्यम से पाश्चात्य देशों में वेदान्त का प्रचार हुआ। दोनो ही विभूतियों के द्वारा भारत की गौरव–पताका विश्व में प्रसिद्ध हुई। स्वामी जी ने सहज सरल अर्थ में वेदान्त का अर्थ समझाते हुए कहा–''मनुष्य के सच्चे स्वरूप को जानना। वेदान्त का यही सन्देश है कि यदि तुम व्यक्त ईश्वर के रूप में अपने भाई की उपासना नहीं कर सकते हो, तो तुम ईश्वर की उपासना कैसे करोगें।''[2]

स्वामी जी ने वेदान्त के माध्यम से अपने गुरू श्री रामकृष्ण देव के विचार ''शिव भाव से जीव सेवा'' को प्रचारित किया। आत्मज्ञान या अपने आप को जानना ही वेदान्त का उद्देश्य है। वेदान्त का मुख्य चार आधार है–ईश्वर एक है, सभी जीवों की आत्मा पवित्र होती है, अस्तित्व एवं धर्म की रक्षा तथा सभी धर्मो में समभाव। श्री राम कृष्ण परमहंस ने अपने मृत्यु के पहले उन्हें वेदान्त के अंतिम सत्य से परिचित कराया वह था जीवित ईश्वर (अर्थात दरिद्र–नारायण, मुर्ख–नारायण, रोगी–नारायण अज्ञानी–नारायण) की आराधना करना। उन्होंने विवेकानन्द को एक विशाल वटवृक्ष बनने की प्रेरणा दी जिसकी छाया में सभी मानव को शक्ति प्राप्त हो। एक बार स्वामी जी ने कहा–''निन्दावाद को एकदम त्याग दो, तुम्हारा मुँह बंद हो और हृदय खुल जाए। सारे जगत का उद्धार करो, घर–घर में वेदान्त के आदर्श पर जीवन गठित हो, प्रत्येक जीवात्मा में जो ईश्वर तत्व निहित है, उसे जगाओं।''[3]

स्वामी विवेकानन्द ने युवा वर्ग को बहुत प्रेरित किया। स्वामी जी को युवा वर्ग से बहुत सी आशा और आकांक्षाए थी। जिस तरफ मृदुल मधुर समीर मानव जीवन के लिए हितकारी है, वैसी ही युवावर्ग देश और मानव समाज के लिए आवश्यक है। यौवन की उर्जा दूसरो में स्फूर्ति देता है और कठिन से कठिन कार्य सम्पन्न करना सम्भव हो जाता है। स्वामी जीने कहा–''हे वीर हृदय युवको ! तुम्हारा जन्म महान कार्य करने के लिए हुआ है, निर्भय बनो, यहाँ तक की यदि आकाश से ब्रजपात भी हो, तो भी न डरो। उठो! कमर कसकर खड़े हो जाओ, कार्य करते चलो।''[4]

स्वामी जी की भावी आशा युवाओं पर ही थी, उन्ही में से वो अपने कार्यकर्त्ताओं को ढुढ़ना चाहते थे। उनका कहना था कि युवा ही उन्नति सम्बन्धी सारी समस्याओं का समाधान करेंगे। स्वामी जी ने युवाओं से अपने भविष्य के कार्यो के प्रति आशा रखी थी। उन्होंने कहा कि–''वर्तमान काल में अनुष्ठेय आदर्श को मैंने एक निर्दिष्ट रूप में व्यक्त कर दिया है और उसको कार्यान्वित करने के लिए मैंने अपना जीवन समर्पित कर दिया है। युवा एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र का विस्तार करेंगे और इस प्रकार हम समग्र भारत में फैल जायेंगे।[5]

स्वामी विवेकानंद जी हमेशा आनन्दमय रहते थे एवं हँसने–हँसाने के लिए प्रेरित भी करते थे। प्रायः लोगो की धारणा होती है कि आध्यात्मिक व्यक्ति विनोद नहीं करते, गम्भीर स्वभाव के होते है। स्वामी जी तो प्यार और विनोद से परिपूर्ण व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। यदा–कदा अनुशासहीनता या त्रुटिपूर्ण कार्य के लिए डाँटते अवश्य थे, परन्तु उसके बाद प्रेम से भी गले लगाते थे। स्वामी जी कहते थे कि ''ये जगत आनन्दमय है, जीव–जन्तु अकाश, पृथ्वी, सब आनन्द से पूर्ण है इतना कहकर स्वामी जी बालक के समान नाचते हुए कहने लगते–आनन्द करो! आनन्द करो! दुखी मत हो। सब परिपूर्ण हो जाएगा। आनन्दमयी माँ सर्वत्र हैं। सब परिपूर्ण हो जाएगा।''[6]

महेन्द्र नाथ ने लिखा है कि नरेन्द्र मेढ़क और मच्छर की कहानी सुनाते। कहानी में वो मच्छरों का गुनगुन आवाज और मेढ़क की आवाज निकाल कर विविध प्रकार की भाव–भंगिना करते हुए कहते और हम सब हंसते हुए सो जाते थे ''विवेकान्द बचपन से ही छोटे भाई–बहनों को विनोद पूर्ण कहानी सुनाकर उनका मनोरंजन करने में सिद्धहस्त थे।''[7]

विवेकानंद जिन्होंने अपनी प्रतिभा और तेजस्विता से सम्पूर्ण संसार को प्रभावित किया, उनका विशाल हृदय सदैव भूखे प्यासे, अशिक्षित गरीब लोगों के लिए व्याकुल रहता था। भारतीय जनसाधारण से उन्हे बहुत प्रेम था। विदेश में रहते हुए भी उन्हें उपेक्षित अभावग्रस्त, दुखी अज्ञानी लोगो की चिन्ता सताती थी। वे उनके दुख को सोच–सोचकर सारी रात रोते रहते थे। उनका मानना था कि देश के कल्याण के लिए दीन–दुखियों का उत्थान और विकास करना होगा। कलकत्ता में प्लेग के समय रोगी नारायण के दुख से कातर विवेकानन्द के मन में, सेवा–कार्य हेतु पैसे की व्यवस्था करने के लिए बेलूड़ मठ की जमीन तक बेचने का विचार आया था, जिससे सेवा कार्य निर्विघ्न होता रहे, पर माँ सारदा की कृपा से बेलूड मठ सुरक्षित रहा। स्वामी जी दुखियों के कष्ट देख कहते ''हे वीर युवको। उनके हृदय भेद कारी करूणा पूर्ण आर्तनाद को सुनों। दरिद्रों को कष्ट दूर करने के लिए, उनके हृदय अंधकार दूर करने के लिए आगे बढ़ो डरो नहीं यही वेदान्त का उद्घोष है।''[8]

विवेकानन्द के विचारों को कार्यान्वित करने के लिए रामकृष्ण मिशन के द्वारा ''गदाघर अभ्युदय प्रकल्प'' आरम्भ किया गया है। संक्षेप में जिसे GAP कहा जाता है, अर्थात् मस्तिष्क और मन के बीच की ''दूरी'' को कम करने के लिए कार्य करना पड़ेगा, चाहे कर्म करने में हाथ या शरीर को कष्ट हो या मैला हो, सहन करना पड़ेगा, क्योंकि यही ईश्वर की सेवा है। रामकृष्ण देव नरेन्द्रदत को अपने शिष्यो में सर्वोच्च स्थान देते थे उतना ही नरेन्द्र की गुरूभक्ति भी अतुलनिय थी। जब रामकृष्ण देव को गले का कैंसर हो गया था उस समय भी नरेन्द्रदत प्राणपण से सेवा करते थे। ठाकुर का रोग बढ़ गया, तब कई लोग आपस में संक्रमित रोग के विषय में आलोचना करते थे, उनलोगों के भाव का दमन के लिए विश्वास की प्रतिमूर्ति, प्रज्वलित अग्नि से सदृश नरेन्द्र नाथ एक दिन ठाकुर जी के पथ्य ग्रहण करने के बाद उनका 'पस रक्त युक्त थुक' पथ्य के पात्र हाथ में लेकर बिना हिचकिचाहट के बचा हुए पथ्य पी गए। उस दिन से सबका सन्देह हमेशा के लिए शान्त हो गया। ऐसे ही कई बार अपने आत्मबल से एवं ठाकुर जी की शिक्षा के कारण नरेन्द्रनाथ विवेकानंद बन गये।''[9]

शिक्षा के क्षेत्र में भी स्वामी जी काफी जागरूकता थी। स्वामी जी का विचार है कि ज्ञान मानव–शरीर का भूषण है। ज्ञान के बिना देश–विदेश, साहित्य, विज्ञान, इतिहास एवं अन्य बहुत कुछ जानना असम्भव है इसलिए ज्ञान–अर्जन के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। साधारण आदमी की उन्नति का सूत्र ही है शिक्षा। स्वामी जी सदैव देश में शिक्षा के अन्धकार में डूबे भारतीयो के लिए 'मनुष्य निर्माणकारी शिक्षा', कारीगरी शिक्षा और व्यवहारिक शिक्षा को महत्व दिया। ''स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ है, उस पूर्णता को अभिव्यक्त करना, जो सभी मनुष्यों में पहले से विद्यमान है।''[10]

निष्कर्ष

चिर–यौवन के प्रतीक स्वामी विवेकानंद एक असमान्य चिन्तक देशभक्त, मानव–हितैषी सर्व कल्याणकारी नर ऋषि के रूप में विख्यात है। उन्होंने पूरे विश्व में प्रेम और मानवता का संदेश दिया, किन्तु आजादी के 75 वर्ष बाद देश में सहिष्णुता, सौहार्द और विकास के लिए विवेकानंद सदैव अपरिहार्य है। स्वामी जी का अवलम्बन लेकर ही

हमारा देश पुनः विश्वगुरू होगा। विश्व के युग – आचार्य, स्वतंत्र भारत के अग्निमंत्र प्रदाता, परम ब्रम्हाग्य, युवाओं के आदर्श परम पूज्य स्वामी विवेकानंद का महाप्राण हुए कई वर्ष बीत चुके हैं। इतने सारे गुणों से विभूषित इस महा मनीषी ने भारत वर्ष के लिए क्या नहीं किया, अगर कोई दूसरा विवेकानंद होता तो समझ पाता। हम धूप – दीप से अपने महापुरुषों का पूजन करना तो जानते हैं मगर उनके द्वारा निर्देशित मार्ग पर अग्रसर होने में उत्साहित नहीं हो पाते। इसीलिए आजादी के कई वर्ष बाद विभिन्न क्षेत्रों में हमारी प्रगति अत्यल्प ही दिखाई देती है ऐसा इसलिए कि हमने स्वामी विवेकानंद के विचारों को न ही ठीक ढंग से समझा न ही सच्चे हृदय से अपनाया। स्वामी विवेकानंद एक अध्यात्म संपन्न सन्यासी होने के साथ–साथ विज्ञान के सारे अनुसंधानों से अवगत थे। उन्हें ज्ञात था कि 20 वीं सदी और उसके बाद का युग विज्ञान और तकनीक का युग होगा, इसीलिए उन्होंने देश की भौतिक समृद्धि और भौतिक विकास के लिए मुल मंत्र दिया – ''उठो, जागो, और चलते रहो'' जबतक की लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। दुनिया के सभी धर्मों के प्रति स्वामी जी को सहिष्णुता में ही विश्वास था। उन्होंने प्राच्य और पाश्चात्य सभ्यता के संवर्धन मे एक नवीन भारत वर्ष बनाने का व्यापक साधन देखा।

संदर्भ सूची

1. विवेकानंद स्वामी, (1993) *मेरे भारत जागो,* R.K.M., कोलकत्ता, पृ. 1।
2. विवेकानंद स्वामी, (2003) *व्यवहारिक जीवन में वेदान्त,* R.K.M., नागपुर, पृ. 51।
3. निराला, सूर्यकान्त त्रिपाठी, (1958) *भारत में विवेकानंद,* R.K.M., नागपुर, पृ. 122।
4. विवेकानंद स्वामी, (1949) *पत्रावली,* भाग–1, R.K.M., नागपुर, पृ. 166, 167।
5. विवेकानंद, स्वामी, (1949) *वार्तालाप,* R.K.M., नागपुर, पृ. 166, 167।
6. वसू, शंकरी प्रसाद, (1964) *सहास्य विवेकानंद,* जयज्ञान, कोलकता, पृ. 99।
7. वहीं, पृ. 80–81।
8. विवेकानन्द, स्वामी, (1949) *पत्रावली,* भाग–2 R.K.M., नागपुर, पृ. 69।
9. गम्भीरानंद, स्वामी, (1994) *युगनायक विवेकानन्द,* R.K.M., नागपुर, पृ. 163।
10. विवेकानन्द स्वामी, (1949) *पत्रावली,* भाग–1 R.K.M., नागपुर, पृ. 114।

****